अजय कुमार शर्मा

ज्योतिषशास्त्र में स्वास्थ्य चिन्तन

पुण्य भारत भूमि पर हि सर्वप्रथम ज्ञान का प्रादूर्भाव हुआ है। यह सुविदित ही है कि निखिल निगम आगम ज्ञान का आधार 'वेद' हैं। वेदों के गूढ. ज्ञान को समझने के लिये छः वेदांगों शिक्षा कल्प शब्द ज्यौतिष निरूक्त छन्द शास्त्रों की रचना हुई।

यथोच्यते -

शिक्षा कल्पो व्याकरणं, निरुक्तं छन्दसां चयः।
ज्योतिषामयनं चैव, वेदांड्गानि षडेव तु।।[1]

छः वेदांड़गों में ज्योतिष शास्त्र न केवल दिशा, काल, यज्ञ, व्रत, उपवास आदि का मूल हेतू है अपितु मानव जीवन में इष्ट प्राप्ति और अनिष्ट परिहार में प्रत्यक्ष रूप से सहायक है।

यथोक्तम् आचार्य वराहमिहिरेण :–

यदुपचितमन्यजन्मनि शुभाऽशुभं तस्य कर्मणः पंक्तिम।
व्यंजयति शास्त्रमेतत् तमसि द्रव्याणि दीप इव।।[2]

ज्योतिषशास्त्र जातक के जन्म–जन्मातंर में किए गए शुभ–अशुभ कर्मों को उसी प्रकार प्रदर्शित करता है जिस प्रकार कि दीप अंधकार में स्थित पदार्थों का बोध करवाता है। ज्योतिष के माध्यम से रोगों की उत्पति स्थिति व काल आदि का ज्ञान सहजता से किया जा सकता है तथा आयुर्वेद के माध्यम से रोगों का कारण तथा निवारण सहजता से प्राप्त किया जा सकता है इसीलिए आदिकाल से विज्ञानद्वय के अंतर्गत आयुर्वेद व ज्योतिष की गणना की जाती है। मनुष्य जीवन का परम प्रयोजन धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, पुरूषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति करना है। यथोक्तम् महर्षिचरकेणः–

धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यं मूलमुत्तमम्।

---

[1] सि(ान्तशिरोमणिः अ0 1 श्लो0 20
[2] लघु जातक अ0 1 श्लो0 3

रोगास्तस्यापहर्तारः श्रेयसो जीवितस्य च।।[3]

पंच भौतिक शरीर में पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश की युति है जिनके विकार से मनुष्य को वात–पित, कफ आदि तथा मानसिक, शारीरिक रोग उत्पन्न होते हैं। उन रोगों की उत्पति, काल, स्थिति, साध्य, असाध्य हेतु निवृति इत्यादि के उपाय ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से ज्ञात होते हैं। वस्तुतः पूर्व जन्म में किए गए अशुभ कर्म ही व्याधि के रूप में फलित होते हैं। यथोक्तम्ः–

जन्मान्तरकृतं पापं व्याधिरूपेण जायते।

तच्छान्तिरौषधैर्दानैर्जपहोमार्चनादिभिः।।[4]

ग्रहों के बल निर्बलता आदि के आधार पर वात–पित, कफ आदि धातुओं की विषमता से तथा आहार–विहार व संयम में विषमता के कारण रोगों की उत्पति होती है। जन्म पत्रिका के माध्यम से रोगों का प्रकार, लक्षण, मात्रा, स्थान, कारण तथा निवारण का ज्ञान किया जा सकता है। मुख्यतः रोग दो प्रकार के होते हैंः–साध्य और असाध्य।

यथोक्तम्

स्वर्क्षौच्चगे वीर्ययुते च साध्या

श्चन्द्रेज्य नीचे विबले न साध्याः।।[5]

जब रोग के उत्पतिकाल में गुरू, चन्द्रमा स्वराशि, स्वउच्च राशि अथवा बलयुक्त हों तो रोग साध्य होता है। लेकिन जब गुरू तथा चन्द्रमा नीच राशि अथवा बलहीन स्थिति में हो तो रोग असाध्य होता है। आचार्य चरक के अनुसार कर्मज और दोषज दो प्रकार कि व्याधियां होती हैं। ः–

कर्मजा व्याध्यः केचिद् दोषजा सन्ति चापरे।।[6]

कर्मज व्याधियों के अंतर्गत अंध, काण, मूक, बधिर इत्यादि रोग आते हैं तथा दोषज व्याधि के अंतर्गत बुखार, कफ, वात–पित आदि दोष आते हैं। अष्टांग संग्रह में शारीरिक और मानसिक भेद से दो प्रकार के रोग माने गए हैं। वीरसिंहावलोक ग्रंथ में प्रतिपादित किया गया है कि कर्म प्रकोप अथवा दोष प्रकोप से शारीरिक व मानसिक रोग उत्पन्न होते हैं। जन्मकुंडली में बारह भावों में प्रथम भाव लग्न शरीर संज्ञक होता है जातक के पूर्ण शरीर का विचार मुख्यतः लग्न भाव से ही किया जाता है। छठा भाव

---

[3] चरक संहित–प्रथम दीर्घ–15
[4] प्रश्नमार्ग–13/29
[5] प्रश्नतन्त्रम्–3/65
[6] चरक संहिता उत्तर तंत्र–40

रिपु और रोग संज्ञक होता है जिससे जातक की जीवन अवधि रोगों आदि का विचार किया जाता है। बारहवां भाव व्यय संज्ञक है तथा लग्न अथवा शरीर के व्यय का विचार बारहवें भाव से किया जाता है। प्रत्येक रोग शरीर की शक्ति का व्यय करता है अतः बारहवां भाव रोग विषय में विचारणीय है। तीव्र बाधा ज्वर, वात–पित्त, कफ आदि व्याधियों के लिए छठा भाव विचारणीय है जबकि आकस्मिक, अकल्पित, अपघात, मरणसूचक रोगों के लिए आठवां स्थान मुख्यतः विचारणीय है। लंबे समय तक चलने वाले रोगों के लिए चोथा व बारहवां भाव विषेशतया विचारणीय माने गए है।

जन्मकुंडली में भाव, भाव में स्थित ग्रह, भावों के स्वामी, राशि, ग्रह, संबंध आदि के द्वारा पृथक–पृथक रोगों का विचार किया जा सकता है। कुंडली से सर्वप्रथम जातक की नैसर्गिक शक्ति कैसी हैं? रोगी की प्रतिकार शक्ति वात–पित आदि में जातक की प्रकृति क्या है सात्विक, राजसिक, ताकसिक मनोधर्मों में कौन सा मनोधर्म है काम, क्रोध, मोह आदि में कौन सा स्वभाव है यह संपूर्ण विचार जन्म पत्रिका से करना चाहिए।

द्वादश भावों से विचारणीय रोग

1. प्रथम भाव से शिरावेदना, मस्तिष्करोग दाह, चर्मरोग, उन्माद, वायुविकार, मुखरोग, रक्तचाप, मलरोग आदि का विचार होता है।
2. द्वितीय भाव से मुखरोग, नेत्ररोग, दन्तरोग, कर्णरोग, श्वासरोगादि का विचार होता है।
3. तृतीय भाव से कर्णरोग, बाहुरोग, निमोनिया, अयोग्य, औषधी प्रतिक्रियादि विचार होता है।
4. चतुर्थ स्थान से जल से दुर्मरणयोग, वाहनादि से अपघात, ह्रदयविकार, स्तनविकार, आत्महनन, आयु के अन्तिम समय में हाने वाले सम्भावित रोगों का विचार होता है ।
5. पंचम भाव से मंत्र–तंत्र, कृत्रिम अभिचारप्रयोगजनित रोग, गर्भ, गर्भकोषविकार, उदरविकार, जलोदर, यकृतविकार, प्लीहविकार, उदरविकार, पाण्डुरोग, गर्भपात, मधुमेह, राजयक्ष्म, आम्लपित्त, आमाशयगतव्रण, आन्त्रिकव्रणादि रोगों का विचार हातो है।
6. षष्ठभाव से तीव्रबाधाकारक रोग अग्निमान्ध, अपच, अतिसार, राजयक्ष्म, पाण्डुरोग, आन्त्रिकसन्निपात, व्रणादि रोगों का विचार होता है।
7. सप्तम भाव से प्रमेह, मूत्रकृच्छ, उपदंश, स्त्रीरोगादि का विचार होता है।

8. अष्टम भाव से दुर्मरण, तीव्रमरणसूचकरोग, गुदाविकार, अपदंश, विषूचिका, भगन्धर, पिशार, आर्तवदोष, मलव्याधि, वृषणवृद्धि, गुप्त रोग, स्त्रीरोगों का विचार होता है।
9. नवम स्थान से सन्धिवात, आमवात, वातरक्तादि रोगों का विचार किया जाता है।
10. दशम स्थान से सन्धिवात, वातरक्तादि का विचार किया जाता है।
11. एकादशभाव से मत्स्य गण्डरोग कर्णरोग, बाहुरोग, का विचार किया जाता है।
12. द्वादशभाव से पुरातनरोग, नेत्ररोग, पक्षाघातादि रोगों का विचार किया जाता है।

मेषादि राशियों से विचारणीय रोग

1. मेष राशि से शिरोरोग, मुखरोग, भ्रम, मद, मोह, उन्माद, निद्रानाश, पित्तदोषप्रधानरोग, अर्धाङ्गवायुविकारादि रागों का विचार किया जाता है।
2. वृष राशि से कण्ठगतरोग, ध्वनिनाश, तालुस्थानगतरोग, श्वास, अपस्मार, गण्डमाला, तन्द्रा, घटसर्प, व्रणदाह मस्तिष्कादि,रोगों का विचार किया जाता है।
3. मिथुन से प्राणवायु, मज्जा, तन्तुविकार, श्वासनलिका दोष, निमोनिया, हस्त भंजन रक्तचापसदि का विचार होता है।
4. कर्क से वक्षस्थलसम्बन्धि रोग, उदररोग, गर्भकोश रोग, अन्नरस रोग, जलोदररोगा, अर्बुद, पाण्डुरोग, जलीय रोग, सांसर्गिकरोग, कफप्रधान रोग, प्रमेह मूत्र–तन्द्रादि रोगों का विचार होता है।
5. सिंह से हृदयविकार–श्वासोछ्वास तीव्रता, मूर्छा, तीव्रज्वर पृष्ठास्थि–रक्तविकार–त्वग्रोग–रक्तचाप–पक्षाघात–पित्तप्रधानरोग– यकृतरोगादि का विचार किया जाता है।
6. कन्या से उदरवेदना–अजीर्ण–अग्निमान्द्य–अतिसार–त्वग्रोग का विचार किया जाता है।
7. तुला राशि से मधुमेह, प्रमेह, मूत्ररोग, वस्तिविकार, मूत्रावरोध, कालरा, मूत्रश्मरी, वातवरणजन्यरोग, वातप्रधानरोगादि का विचार किया जाता है।
8. वृश्चिक से उपदंश गनोरिया, आर्तवविकार, स्त्रीरोग, हर्निया, वृषणवृद्धि, मूत्रविकार, भगन्धर, पिशार, रक्तपित्त, वीर्यदोष, योनिविकृति, लिंगविकृति, सांसर्गिकरोग, कफप्रधानरोगादि का विचार किया जाता है।

9. धनु से शिरायु स्नायो विकार सन्धिवात आमवात, धनुर्वात जंघापृष्ठशूल, अपघात, पित्तप्रधानरोग, रक्तचाप, दुर्मरणादि का विचार किया जाता है।
10. मकर से त्वग्रोग शिरोगतवायु–आमवात–महारोग–कुष्ठरोग–हिस्टीरिया–मधुमेहसदि का विचार किया जाता है।
11. कुम्भ से रक्तसम्बन्धित रोग, हृदयविकार, पाणिपादशलाकावेदना, ऊरूनलकयोर्वेदना, विषबाधा, मूर्छा, रक्तचाप, मधुमेह, प्रमेह, यकृतदोष, पाण्डु, वातावरणजन्यरोगदि का विचार किया जाता है।
12. मीन से शीतज्वर, काश, निमोनिया, सुरापानमूत्रविकारः, कफप्रधाानरोगदि का विचार किया जाता है।

नवग्रहों से विचारणीय रोग

1. सूर्यग्रहः–

जन्म कुंडली में सूर्य के अशुभ प्रभाव से शिरोवदना, शूल, प्रमेह, विषम ज्वर, पित्त रोग, अम्ल शूल, हृदय रोग, दाहक ज्वर, हैजा, आदि रोगों का विचार किया जाता है।

शिरः पीड़ा प्रमेहश्च सततः सन्ततो ज्वरः।
पित्तरोगोऽम्लशूलश्च हृदरोगश्च विसूचिका।।
शिरोव्रणादिकं चैव विषजो दाहक ज्वरः।
यमार योगाद्धिक्का च रवौ व्याधिविनिर्णय।।[7]

अशुभ सूर्य जनित रोगों के उपचार के लिये माणिक्यदान, धारण, माणिक्यभस्मसेवन सूर्य यन्त्रसाधन, मन्त्रजप, सूर्यपूजन तथा रक्तचन्दन पंचगव्य आदियुक्तजल से स्नान करना चाहिये। सूर्य की शान्ति के लिये तॉबा, गुढ़, गेहूं गोघृत, स्वर्णवस्त्र, रक्तपुष्प, आदि का दान करना चाहिये।

2. चन्द्रमाः–

जन्मपत्रिका में चन्द्र ग्रह के प्रकुपित अवस्था में होने से गलगण्ड, गण्डमाला, ज्वर, कफ, दूषितजन्म, ज्वर, कास, वमन, क्षय, कफजशूल, श्लीपद, जलोदर, पीड़ा, नेत्रविकार, अतिसार, हृदयरोग, श्वासकृच्छ्रता, मतिभ्रमादि रोगों का विचार किया जाता है।

यथोक्तं प्रश्नकल्पतरूग्रन्थे–

[7] प्रश्नकल्पतरूः 2/19

गलगण्डो गण्डमाला ज्वरश्च कफदूषितः।

कासच्छर्दिः क्षयं शूलं श्लीपदश्च जलोदरी।।

आमपीड़ाऽतिसारश्च हृदरोगः श्वासकृच्छ्रता।

एते वै चन्द्रजा रोगाः मुनिभिः परिकीर्तिताः।।[8]

अशुभ चन्द्र जनित रोगों के उपचार के लिये मुक्तादान मुक्ताधारण मुक्ताभस्मसेवन चन्द्र यन्त्रसाधन मन्त्रजप वरूणपूजन तथा श्वेचन्दन पंचगव्य आदियुक्तजल से स्नान करना चाहिये। चन्द्रमा की शान्ति के लिये रजत, अक्षत, दधि, श्वेतवस्त्र, श्वेतपुष्प, शंखकर्पूर, घृत आदि का दान करना चाहिये।

3. मंगल –

जातक की जन्मपत्रिका में अशुभभौम के कारण रक्तपित्त, दाद, भगन्दर, रक्तदोष, प्रमेह, मज्जारूक्षता, अस्थिभंग, कुष्ठ, शोथ, अण्डवृद्धि, बवासीर, रक्तातिसार, एनीमिया इत्यादि रोग होते हैं।

रक्तपित्तोद्भवा पीडा दद्रुरोगो भगन्दरः।

रक्तद्रष्टि प्रमेहश्च विस्फोटक भयं महत्।।

दुष्टव्रणोऽस्थिभङ्गश्च रक्तस्त्रावोऽग्निजं भयम्।

अर्शो रक्तातिसारश्च व्याधयः कुजसम्भवाः।।[9]

अशुभ भौम जनित व्याधि से मुक्ति के लिये प्रवालधारण प्रवालदान प्रवालभस्मसेवन करना चाहिये । बिल्वछाल, रक्तचंदन, रक्तपुष्प, जटामासी आदि औषधियों क`जल से स्नान करना चाहिये। कांस्य, घृत, मूंगा, अन्न, रक्तवस्त्र, कस्तूरि , गुड, गोधूमादि का दान तथा भौम के मन्त्रयन्त्रपूजनादि करने चाहिये।

4. बुधग्रहः–

जन्मपत्रिका में अशुभ बुध के कारण वाक्, जिह्वा, स्वर, कण्ठ, नलिका, मज्जा, तन्तु, फुफुस, मुख, केश, हस्त त्वकरोग– वायुजन्यपीडा, उन्माद, वमन, गलरोग, ज्वर, पाण्डु, कुष्ठ, मन्दाग्नि, गुह्यादि रोगों का विचार किया जाता है।

त्वग्दोषो वायुजा पीडा जिह्वारोगो विचर्चिका।

मत्तता वमने श्लेष्मा बुधे त्रिदोषदुष्टता।।[10]

---

[8] प्रश्नकल्पतरूः 2/20
[9] प्रश्नकल्पतरू 2/21
[10] प्रश्नकल्पतरू 2/22

बुध जन्य रोगों के शमनार्थ पन्ना रत्न धारण, दानं, भस्म सेवन लाभप्रद होता है। अक्षत, गोरोचन, मधु, जायफल, पीपलमूल इत्यादि मिश्रित जलस्नान से बुधजनित रोगों का निवारण होता है।

5. गुरू ग्रहः–

जन्मपत्रिका में अशुभ गुरू के कारण मस्तिष्क, कर्ण, जिह्वा, नासिका, नेत्रादि रोग होते है। शरीर, स्थूलता, श्वास, कॉस, रक्तविकृति, यकृत, उदर, चर्म, वीर्य, मूर्छा, मस्तकविकृति, अकस्मात पतन, मानसिककष्टादि अनेक रोग होते हैं।

उत्तमाङ्गोद्भवा पीड़ा मेदोरोगोऽङ्घ्रि वेदना।

अकस्माच्छ्वासरोधश्च गुरोर्व्याधिविनिश्चयः।।[11]

गुरू ग्रह का रत्न पुष्पराग होता है। इसके भस्मादि सेवन, दान व धारण करने से स्वर्ण, कॉस्य, घृत, हरिद्रा, पुष्पक, पीतवस्त्र, चणक, आदि वस्तूओं के दान से रोगों का निवारण होता है।

6. शुक्रग्रहः–

जन्मपत्रिका में अशुभ शुक्र के कारण नेत्र, गुह्य, वीर्यविकृति, प्रमेह, मूत्र, उपदंश, गर्भाशय, वक्षस्थल, प्रजननेन्द्रिय, पक्षाघात, प्रदर, गर्भाशय शूल मज्जाविकारादि रोग होते हैं। उक्त प्रश्नकल्पतरूग्रन्थेः–

नेत्रे गुह्ये गुदे लिंगे रोगः स्याद् भृगुदोषजः।

प्रमेह शोथमूत्रंच गुल्मरोगोपदंशकः।।

स्त्रीणां प्रदरपीडा च गर्भ शूलादिदूषणम्।

इन्द्रियाणां विकारः स्यान्मुष्कवृद्धि ज्वरो महान्।।[12]

अशुभ शुक्र जनितरोगों के निदान के लिये वज्रधारण, दानं, हीरे की भस्मसेवन लाभप्रद होता है। जायफल, पीपरामूल, केसर, ऐला, कुमकुम, मनसिलादि मिश्रितजलस्नान तथा रजत, श्वेतचन्दन, दुग्ध, दधि, तण्डुलाक्षत, श्वेतादिवस्तूनओं का दान तथा यन्त्रमन्त्रों की उपासना करनी चाहिये।

7.शनिग्रहः–

चक्ष्मावातोदरो मूर्च्छास्नायुरुक् कृमिसम्भवांः।

पक्षाघातस्तथा ष्वास प्लीहा ज्वरेण शीर्णता।।

---

[11] प्रश्नकल्पतरू 2/23
[12] प्रश्नकल्पतरू 2/24

सर्वत्र वायुजा पीडा हस्तपादप्रकम्पनम्।

एते हि शनि रोगाः स्युर्विज्ञेया मुनिसम्मताः।।[13]

जन्मपत्रिका में अशुभ शनि के कारण राजयक्ष्मा, वातोदरा, मूर्च्छा, प्लीहोदर, स्नायुपीडा, कृमिरोग, पक्षाघात, श्वास, जीर्ण, ज्वर, वायुजन्यरोग तथा हस्तपादादिकम्पन इत्यादिरोग होते हैं । इन रोगों कीं शन्ति के लिये नीलमरत्नधारण, दान, भस्मादिसेवन व यन्त्रमन्त्रों की उपासना करनी चाहिये।

8. राहुग्रहः–

अशुभ राहु के कारण मानसिक व्याधि, उन्माद, अपस्मार, मसूरि, संक्रामकता, नेत्रकृमिजनितरोग, भूतप्रेतपिशाचादि जनित व्याधियां होती हैं।

करोत्यपस्मारमसूरि रज्जूसुदह्वकृमिप्रेतपिशाचभूतैः।

उद्वन्धनेना रूचि कुष्ठरोगैविधुन्तुदश्चातिमचं नराणाम्।।[14]

इन रोगों के निदान के लिये गोमेदरत्नधारण, दानं, भस्मादिसेवन करना चाहिये। गजदन्त, लोबान, कस्तूरिजलस्नान करना चाहिये। सीसा, तिल, कम्बल, खड्ग, अभ्रकादि के दान से लाभ मिलता है।

9. केतूग्रहः–

अशुभ केतू के कारण पित्तसंबधिरोग, शरीरदाह, ज्वर, अग्निमान्द्य, नेत्रविकार, छायादोष आदि का विचार होता है।

इन रागों के निदान के लिये वैदूर्य धारण, दान, भस्मादिसेवन लाभप्रद होता है।

रोगपरिहारः

रोग व्याधियों कें उपशमन के लिये औषधी, दान, जप, होम, देवतार्चन आदि उपाय करने चाहिये। यथोक्तम्

तच्छान्तिरौषधैर्दानैर्जपहोमार्चनादिभिः।।[15]

---

[13] प्रश्नकल्पतरू 2/25

[14] फलदीपिका2/21

[15] . प्र0 मा0–13/29

यदि व्याधि का उपशमन कष्टसाध्य हो तो उन रोगों के लिये चिकित्सा, ग्रहशान्ति के साथ–साथ प्रयाश्चित करना चाहिये। यथोक्तम्

प्रायश्चितं दृःश्यमरोगे शमनाय तत्तदुतितमपि।

कार्यं सवैष्ववदत् स्वग्रन्थे सायणोऽस्य वचनमिदम्।।[16]

जातकपारिजातग्रन्थोक्तम् :–

यद्धातुकोपजनिताखिलरोगशान्त्यै

तन्नाथमाशु जपतर्पणहोमदानैः।

सम्पूज्यरोगभयशोकविमुक्तचिन्ताः

सर्वे नराः सुखयशोबलशालिनः स्युः।।[17]

शरीर में जिस धातु के कारण वात् पित्त कफादि रोगा हों उस धातु से सम्बन्धित ग्रह का जप, तर्पण, होम, दान, पूजनर्चन आदि कारवना चाहिये।

औषधं पश्यमहारं तैलाभ्यंगं प्रतिश्रयम्।

रोगिभ्यः श्रद्धया दधाद्रोगी रोगविमुक्तये।।[18]

प्रश्नमार्गकार ने सभी प्रकार के रोगों की शान्ति के लिये महामृत्युंजय का जाप और हवन का विधान किया है ।यथोक्तम् –

मृत्युंजय–हवन खलु सर्वरूजां विधेयं स्यात्।

सर्वेष्वपि होमेषु ब्रहमणमुक्तिस्तथाप्तवचः।।[19]

---

[16] प्र0 मा0 13/25

[17] जातकपारिजात–1/84

[18] प्र0 मा0 13/35

[19] प्रश्नमार्ग 2/29